Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, Impact Factor: 7.866, Volume 15, No. 02, April-June 2025, pp. 200-204

कला व प्रेम का अर्न्तसम्बंध

डॉ. नवल किशोर जाट*

प्रस्तावना

कला

कला शब्द, अनेक तरह के मानव कार्य –व्यापारों के लिए, बिना किसी विवेक के प्रयुक्त किया जाता रहा है– मानव के उदात्त उद्यमों से लेकर केश–विन्यास या शतरंज खेलने के कौशल तक के लिए। इसलिए कोई एक परिभाशा इस शब्द को पूरी तरह स्पश्ट नही कर पाती। यदि हम कला शब्द को उसके स्वाभाविक क्षेत्र तक ही सीमित रखें यानी संगीत, साहित्य, नाटक, चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला और हस्तकला तक, तब भी कोई संतोशजनक उत्तर नही मिलता। कला तथा सौंदर्यशास्त्र के लेखक इस प्रश्न का कोई निश्चयात्मक उत्तर पाने मे असमर्थ रहे हैं। अतः कला की किसी मान्य परिभाशा के बिना, और किसी नई परिभाशा को गढने की परेशानी से बचते हुए, हम इस अर्मूतन से बाहर निकलें और यह जानने की कोशिश करें कि कोई कलाकृति कैसे अस्तित्व में आती है।

जैसा कि आमतौर पर माना जाता है, सृजन–आवेग ही सभी कलाओ की मूल शक्ति होता है। संगीतज्ञ ऐसी रचनाओं का सृजन करने के लिए प्रेरित होता है, जो सुनने में अच्छी लगें; पढ़ने में अच्छी लगने वाली रचनाओं के सृजन के लिए प्ररित होते है, जो देखने में अच्छी लगे। यह सृजन का रोमांच, कोई नई चीज बनाने की उत्तेजना ही है, जो इसके लिए श्रम करने तथा सर्जक को शक्ति प्रदान करने में सक्षम बनाती है। वैसे ही कलाकार का सृजन सजीव हो उठता है, वह परम आनंद का अनुभव करने लगता है। तब वह सम्राट होता है, अपने छोटे से संसार का ईश्वर होता है।

''मैं जब चित्र बनाता हूँ, तब स्वयं को राजकुमार की तरह अनुभव करना चाहता हूँ, एक महान जापानी कलाकार का कहना है और यही इच्छा हर सच्चे कलाकार के अवचेतन मन में बसी होती है।''

''मलिगा वात्सायन को 64 कलाओं का जानकार माना गया है, ये 64 कलाएं हैं, 1. गायन, 2. वाद्य, 3. नृत्य, 4. चित्र कला, 5. माथे को सजाने की कला, 6. जमीन को सजाने की कला, 7. फूलों से जमीन को सजाना, 8. दांत को रंगना, 9 होंठों व गालों को चित्रित करना, 10. रंगीन पत्थरों को जमीन पर सजाना, 11. सोने के लिए बिस्तर बनाना, 12. पानी के खेल, 13. अपनी खूबसूरती से लुभाना मोहना, 14. फूलो की माला बनाना, 15. बालों की सजावट, 16. फूलों को लगाना, 17. सौन्दर्य प्रसाधन, 18. हाथी के दांत से कानों के कुण्डल बनाना, 19. इत्र व सौन्दर्य प्रसाधन बनाना, 20. बहुमूल्य रत्नों को तराशना, 21. मन बहलाने के लिए छोटे–छोटे जादू, 22. त्वचा को सुन्दर बनाने, 23 काम इच्छा को बढ़ाने के लिए मिश्रण तैयार करना, 24. हाथ की सफाई, 25. मदिरा बनाना, 26. पाक शास्त्र, 30. सिलाई–कढ़ाई, 31. गुड़ियां बनाना, 32. वीणा व दूसरे साजों की सरगम सीखना, 33. कूट प्रश्नों को हल करना, 34. श्लोक प्रतियोगिता, 35. कठिन श्लोकों, दोहों का सही उच्चारण करना, 36. प्राचीन ग्रन्थों के श्लोकों का गीत के रुप में उच्चारण, 37. अभिनय, 38. पंक्ति के रिक्त

* सहायक आचार्य–चित्रकला, राजकीय कन्या महाविद्यालय, राजगढ़, अलवर, राजस्थान।

स्थानों को भरना, 39. लकड़ी की नक्काशी, 40. गलीचा बनाना, 41. वास्तुकला, 42. सोने व रत्नों की बनी सामग्री का मूल्यांकन करना, 43. रासायन विद्या, 44. रंगीन स्फस्टिक, 45. बागवानी, 46. पक्षियों व जानवरों को आपस में लडना सीखना, 47. तोतों को सिखाना, 48. शरीर की मालिश करना, 49. हाव–भाव बनाना 50. गुप्त भाषा सीखना 51. भाषाएं सीखना, 52. जानवर जैसे हाथी, घोड़ा आदि को फूलों से सजाना व बनाना, 53. स्मृति प्रशिक्षण, 54. कविताएं लिखना, बनाना, 55. प्रमुख व्यक्तियों के लिए श्लोक लिखना, 56. कोश रचना कला, 57. श्लोकों में रिक्त स्थान भरना, 58. आकारों की भाषा, 59. ऐसी बोली बोलना मानो किसी दूर के व्यक्ति द्वारा बोला गया शब्द आ रहा है, 60. भेष बदलने की कला, 61. जुआ खेलना, शतरंज, 62. कपडे पहनने की कला, 63. गेंद के खेल व पालतू जानवरों को प्रशिक्षित करना एवं लड़ाई की कला, 64. शारीरिक संस्कार।''

कला की परिभाषा को समझने के बाद प्रश्न उठता है कि प्रेम क्या है ? इस बारे में दार्शनिकों और मनोवैज्ञानिकों आदि ने अपने विचार व्यक्त किए हैं, और आज तक इस विषय पर खोज का काम चल रहा है, यहाँ तक कि विज्ञान में भी इसकी कोई निश्चित परिभाषा नहीं हैं।

प्रेम

क्या यह केवल सुंदरता की अभिव्यक्ति है, या वासना का कोई चरण है, कुछ मनुष्य प्रेम को एक रहस्य समझकर इस मुद्दे पर बहस करना पसंद नहीं करते हैं। यह हमारे मन की भावना है, प्रेम ही शक्ति है। प्यार मानवीय दूरी को कम करने का एक तरीका है। जीव की मूलभूत प्रवृत्तियों में सबसे प्रभावशाली प्रेम है, जो संपूर्ण सृष्टि को बांधता है। यह विश्वव्यापी है। प्रेम अब कोई पदार्थ या वस्तु नहीं है, प्रेम में कुछ चीजें होती हैं। जैसे एक–दूसरे की चिंता करना, जिम्मेदार होना, सम्मान रखना। सम्मान और पहचान का मतलब अब चिंता या डर नहीं है।

प्यार रहना और जानना आसान है, कहना कितना भी चुनौतीपूर्ण क्यों न हो। जैसे कोई मछली से पूछ रहा हो कि सागर क्या है ? तो मछली कह सकती है कि सागर यहीं है और चारों ओर बह रहा है। लेकिन कोई पूछता है कि क्या है, इसकी जानकारी मत देना, मछली के लिए मुश्किल होगी। मनुष्य के जीवन में जो कुछ भी उत्कृष्ट है, वह सुंदर है, और सही है, इसे जीया जा सकता है, इसे जाना जा सकता है, हुआ जा सकता है। लेकिन यह कहना बहुत मुश्किल है। दुर्भाग्य और दुर्भाग्य यह है कि मानव जाति छह हजार वर्षों से केवल इस बारे में बोल रही है कि क्या रहना चाहिए, जिसमें क्या किया जाना चाहिए। प्रेम की बातें हो रही हैं, प्रेम के गीत गाए जा रहे हैं, प्रेम के गीत गाए जा रहे हैं और मानव जीवन में प्रेम का कोई क्षेत्र नहीं है। अगर आप एक आदमी के अंदर खोजने के लिए जाते हैं, तो अब आपको प्यार से बड़ा झूठा दूसरा वाक्यांश नहीं मिलेगा और जिन्होंने मुहब्बत को बेवफा बना दिया है और मुहब्बत की तमाम धाराओं को रोक दिया है।

धर्म प्रेम की बात करता है, लेकिन आज तक जिस तरह का विश्वास मानव पर दुर्भाग्य की तरह बंधा हुआ है, उस विश्वास ने मानव जीवन के लिए प्रेम के सभी द्वार बंद कर दिए हैं और इस सराहना में पूर्व और पश्चिम में कोई भेद नहीं है, न भारत में और न ही अमेरिका में।

प्यार की चाल शायद अब इंसान के वजूद में भी न दिखे और अगर यह अब संभव नहीं है, तो हम दोष देते हैं कि आदमी बुरा है, इसलिए उसे अब प्रकट नहीं होना चाहिए। हम दोष देते हैं कि विचार ही जहर है, इसलिए यह अब और प्रकट नहीं होना चाहता है। मन अब विष नहीं रहा और जो विचार को विष कहते हैं, उन्होंने प्रेम में विष डाला है, अब प्रेम को प्रकट नहीं होने दिया, विचार विष कैसे हो सकता है ? इस दुनिया में कुछ भी जहर नहीं है। ईश्वर की इस लीला में कुछ भी विष नहीं है, सारा कुछ अमृत है। लेकिन मनुष्य ने सभी अमृत को जहर दे दिया है और इसमें जहर देने में शिक्षकों, संतों, संतों और तथाकथित आध्यात्मिक मनुष्यों का सबसे बड़ा हाथ है। इसे थोड़ा पहचानना जरूरी है। क्योंकि अगर अब यह पहलू नहीं देखा गया तो भविष्य में भी इंसान की जीवनशैली में प्यार कभी नहीं होगा..... क्योंकि जिन उद्देश्यों के लिए प्रेम अब पैदा नहीं हुआ है, हम इन उद्देश्यों को प्रेम व्यक्त करने का आधार और कारण बना रहे हैं। स्थिति ऐसी है कि गलत विचारों को

एक हजार साल तक दोहराया जाए तो हम उस विचार को गलत समझ लेते हैं ! क्योंकि वह अब इन सिद्धांतों को पूरा करने की स्थिति में नहीं है। मैं यह कहना पसंद करता हूँ कि वह गलत है और यह आदमी गलत–सबूत है। और सबूत क्या है ?

यदि हम एक बीज बोते हैं और फल जहरीला और कड़वा होता है तो यह क्या दर्शाता है ? यह साबित हो गया है कि बीज जहरीला होना चाहिए था। हालांकि, बीज से यह सत्यापित करना कठिन है कि यह जो फल पैदा करेगा वह कड़वा होगा या नहीं। बीज खोजा नहीं जा सकता। बीज को तोड़ों कोई यह नहीं समझ सकता कि जो फल पैदा करेगा वह कड़वा होगा। बीज बोने में सौ वर्ष लगेंगे–वृक्ष बढ़ेगा, बढ़ेगा, आकाश में फैलेगा, तब फल आएंगे और तब तुम समझोगे कि वे कड़वे हैं।

छह हजार वर्षों में जीवन और विश्वास के बीज बोए गए हैं, यह मनुष्य इसका फल है और यह कड़वा और घृणा से भरा है। लेकिन उसका रोना जारी रहता है और हम मान लेते हैं कि उसे प्यार हो जाएगा। मैं आपको सूचित करना पसंद करता हूँ कि वह प्यार में नहीं हो सकता। क्योंकि प्रेम के जन्म के मौलिक अवसर को धर्मों ने मार डाला है और जहर दिया है।

मनुष्य से अधिक प्रेम पशु–पक्षियों और पौधों में देखा जाता है, जिनकी न परंपरा है न धर्म। संस्कृत और सभ्य और सभ्य पुरुषों की तुलना में असभ्य और जंगल के आदमी में अतिरिक्त प्रेम माना जाता है, जिनका कोई विकसित धर्म नहीं है, कोई सभ्यता नहीं है, कोई संस्कृति नहीं है। जितना बड़ा सभ्य, सुसंस्कृत और धार्मिक चरित्र धर्मों के प्रभाव में प्रार्थना करने लगता है, वह प्रेम से रहित क्यों हो जाता है ? ईमानदारी से कुछ कारण हैं। प्रेम अब ऐसा घटक नहीं है कि उसे खोजने के लिए कहीं जाना पड़े। सबके अंदर रहन–सहन की प्यास है, सबके अंदर रहन–सहन की महक है। लेकिन उसके चारों ओर घूंघट है और वह अब प्रकट होने की स्थिति में नहीं है। सभी जगहों पर पत्थर के विभाजन हैं और झरने अब नहीं टूटते। तो प्रेम की खोज और प्रेम का अभ्यास अब सकारात्मक नहीं है, कोई शानदार खोज और व्यायाम नहीं है कि हमें उसी प्रेम पर जाकर शोध करना है।

प्रेम क्षमता आकर्षण! प्रेम चुंबकीय सिद्धांत की नींव पर काम करता है। न केवल मनुष्य बल्कि सभी प्राणियों की प्रमुख अपील विपरीत लिंग है। यह प्रकृति के नियम के समान है, इस अपील को छोड़कर अब आगमन संभव नहीं है। यह आकर्षण और हर दूसरे की ओर खींच को ही प्रेम कहा जा सकता है। विपरीत संभोग के मनुष्यों के साथ संबंधों में भी वासना होती है, जिसे प्रेम का चरण कहा जा सकता है, क्योंकि वे हर दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं और प्रेम खेलते हैं। यह आकर्षण सृष्टि का आधार है।

प्यार की एक और पहचान है भरोसा! जितना कम भरोसा, उतना ही कम प्यार। आज मनुष्य के अस्तित्व का एकमात्र अच्छा और पवित्र उत्तर प्रेम है, प्रेम जीवन में मिठास लाता है, प्रेम लंबे दर्द का कारण बनता है, प्रेम अब किसी से ईर्ष्या नहीं करता है, अब घमंड नहीं करता है, प्रेम किसी का भी बुरा नहीं मान सकता, प्रेम कर सकता है' मजबूर नहीं होना चाहिए, प्यार जीवन की स्थिति और मुद्दों का सामना करने के लिए ऊर्जा प्रदान करता है। जब कोई पुरुष या महिला किसी अन्य व्यक्ति से प्यार करता है, तो वह गहराई में जाने के लिए उसके बारे में अतिरिक्त जागरूक होने की कोशिश करता है। वास्तव में पूरी तरह से संतुष्ट होने के लिए प्रेम की आवश्यकता होती है। मानसिक रूप से स्वस्थ होने के लिए हम प्यार चाहते हैं। दोस्ती, घरेलू बंधन या रोमांस में लगे लोगों में दूसरों की तुलना में अधिक बौद्धिक फिटनेस होने की प्रवृत्ति होती है।

प्रेम के रूप

ग्रंथों में इसकी तीन किस्में मानी गई हैं –

- **शारीरिक रूप,**
- **मानसिक रूप**
- **आध्यात्मिक रूप**

- **शारीरिक रूप :–** इस सम्बन्ध में आत्मा के अलावा शरीर भी शामिल होता है। जब आत्मा और शरीर का मिलन होता है, तो वह बहुत सुन्दर होता है। क्योकि यह मिलन ही सृष्टि का आधार है। इस प्रेम में वासना भी शामिल होती है। जब विपरीत लिंग के लोग आपस में एक दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं, और प्रेम क्रीड़ा करते हैं, तो इस क्रिया आपस में एक दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं, और प्रेम क्रीड़ा करते हैं, तो इस क्रिया से मिलने वाला आनन्द ही परमानन्द कहलाता है। इस सम्बन्ध को लेकर कलाकारों ने अपने–अपने विचार प्रकट किए हैं।

हमारे यहां तो इसका सबसे अच्छा उदाहरण खजुराहो, कोणार्क के मंदिरों पर उकेरी गई कृतियां हैं। जिनमें स्त्री और पुरुष को सम्भोग की विभिन्न मुद्राओं में बनाया है।

- **मानसिक रूप :–** इस सम्बन्ध में आत्मा का आत्मा से सम्बन्ध होता है, इसमें वासना का कोई स्थान नहीं होता। इसके दो रूप हैं ।
  - **स्नेह :–** पिता का पुत्र के साथ, भाई का भाई के साथ, दोस्त का दोस्त के साथ, भाई का बहन के साथ, बहन का बहन के साथ आदि सम्बन्ध स्नेह के उदाहरण हैं।
  - **वात्सल्य :–** इस सम्बन्ध में माता व उसके बच्चे का सम्बन्ध होता है।
- **आध्यात्मिक रूप :–** इसमें आत्मा का ब्रह्मा के साथ प्रेम होता है। इसमें शरीर का कोई मतलब नहीं होता, जैसे भक्त का भगवान से, राधा का कृष्ण से। इस सम्बन्ध को स्थापित करने के लिए व्यक्ति को इस प्रकृति से ऊपर उठना होता है। हर व्यक्ति का प्रमाण अलग अलग होता है, जो कि अपने ज्ञान के ऊपर आधारित है।

भारतीय कला में प्रेम के प्रतीकों को तीन भागों में बांटा गया है –

- आदमी और जानवर के अभाव में प्रदर्शन किया हो।
- मानवरूपी।
- चतुश्पदरूपी आकार।

प्रागैतिहासिक काल में, हमें पुरुषों और महिलाओं के प्रतीकात्मक रेखाचित्र मिलते हैं। गुफाओं और उनके निवास स्थानों में पाए जाते हैं। जिसमें काम के निशान भी काफी काम आते हैं। जिसका वर्णन हमने पुरातत्व स्रोत में किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आधुनिक चित्रकला, प्रो॰ रामचन्द्र शुक्ल, साहित्य संगम प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2006
2. अग्रवाल डॉ. गिर्राज किशोर – जापान की चित्रकला– देव ऋषि प्रकाशन, अलीगढ़
3. अशोक – जापान की चित्रकला– ललित कला प्रकाशन, अलीगढ़
4. अग्रवाल जी.के. – कला समीक्षा–ललित कला प्रकाशन, अलीगढ़
5. अग्रवाल डॉ. गिर्राज किशोर – भारतीय चित्रकला का आलोचनात्मक इतिहास कला और कलम– अशोक प्रकाशन मन्दिर अलीगढ़– 2012
6. अग्रवाल, आर. ए. : कला विलास–भारतीय चित्रकला का विकास, लायल बुक डिपो, मेरठ, 1984, 2000।
7. अग्रवाल, आर. ए. और शर्मा, एस. के. : रूपप्रद कला के मूलाधार, लायक बुक डिपो, मेरठ,
8. अग्रवाल, आर. ए. एवं चोयल, पी.एन. : चित्र संयोजना, लायल बुक डिपो, मेरठ, 1981

9. अग्रवाल, गिर्राज किशोर : कला और कलम, अशोक प्रकाशन मन्दिर, अलीगढ़, 1980
10. अग्रवाल, श्याम बिहारी : रूप शिल्प, इलाहाबाद, 1986
11. अशोक–कला निबन्ध – संजय पब्लिकेशन शैक्षिक पुस्तक प्रकाशन, आगरा– 2012
12. आर्य, विनोद कुमार : भारतीय कला की कहानी, अंकुर बुक डिपो, अजमेर, 2001
13. आठवले सदाशिव, इतिहासाचे तत्त्वज्ञान (दूसरा संस्करण) प्राज्ञ पाठशाला मंडल, वाई, 1986
14. आठवले सदाशिव, इतिहासाचे तत्वज्ञान, पाज्ञ पाठशाळा मंडळ, वाई (दूसरा संस्करण), 1986
15. इनामदार एस डी, बहुलकर सुहास, आधुनिक महाराष्ट्राची जडण घडण, शिल्पकार चरित्र कोश, खंड 6ठा, (दृश्य कला), साप्ताहिक विवेक, हिंदुस्थान प्रकाशन संस्था, मुम्बई, 2013
16. उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत एवं कला अकादमी – कलावार्ता अंक 120–121 अप्रैल से सितम्बर 2008– भोपाल
17. उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत एवं कला अकादमी, कला वार्ता संयुक्तांक 121–122 अप्रैल से सितम्बर 2008, भोपाल
18. उपाध्याय, डॉ. विद्यासागर : भारतीय कला की कहानी, दी स्टूडेण्ट्स बुक कम्पनी, जयपुर, 1994
19. उपाध्याय, डॉ. विद्यासागर : राजस्थान के रंग, जवाहर कला केन्द्र एवं राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, 1998
20. एकेश्वर प्रसाद – विज्ञापन कला, हटवाल
21. कम्बोज प्रो. भगवती प्रसाद – प्राचीन यूरोपीय कला–रतन प्रकाशन मन्दिर, आगरा–1983
22. कक्कड़, कृष्ण नारायण : समकालीन कला–सन्दर्भ तथा स्थिति, ललित कला अकादमी, दिल्ली, 1980
23. कालसीवाल मीनाक्षी 'भारती'– ललित कला के आधारभूत सिद्धान्त– हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर– 2007
24. कुमार सुनिल, भारतीय छापाचित्र कला आदि से आधुनिक काल तक, भारतीय कला प्रकाशन, दिल्ली 2000
25. कौशिक दिनकर, विश्रब्ध शारदा, ह. वी. मोटे प्रकाशन, मुम्बई, 1993
26. गुर्टु शचीरानी–कला दर्शन – साहनी प्रकाशन– 1956
27. गुर्जर शर्मिला, वस्त्ररंगाई तकनीक, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2003
28. गैरोला, वाचस्पति : भारतीय चित्रकला, मित्र प्रकाशन, इलाहाबाद, 1963

♦❐♦